भारत में सामाजिक सुधारवादी आंदोलन - भूमिका एवम् कार्य

प्रा.प्रमोद एस. मेश्राम
सहाय्यक प्राध्यापक , श्री.मनोहर हरी खापणे कॉलेज,पाचल.

प्रस्तावना:-

प्राचीन काल से आधुनिक भारतीय समाज धार्मिक, सामाजिक रूढीवादी अवस्था में फसा हुआ था। उन्नीसवी शताब्दीतक भारत की स्थिती सोचनिय थी। इसी कारण भारत के अलग -अलग भागों मे सामाजिक, धार्मिक सुधारवादी आंदोलनों की नीव डाली गयी। जिसमें बुध्दिजीवी वर्ग के महत्वपूर्ण लोगो ने सुधार लाने के लिए आन्दोलन चलाने की आवश्यकता पर बल दिया। जिसमें ज्योतिबा फुले, महादेव रानडे, ताराबाई शिंदे, गोपाल कृष्ण गोखले, छत्रपती शाहु महाराज, परियार ई. वी.रामास्वामी, रायमोहनराय, ईश्वरचंद विद्यासागर, विवेकानंद, अरविंद घोष, दयानंद सरस्वती, डॉ.भिमराव अंबेडकर और अन्य सभी...

19 वी शताब्दी में बंगाल में राजा राममोहन राय के नेतृत्व में सुधारों का आरंभ हुघा। उन्होंने 1814 में आत्मीय सभा की स्थापना की जो उनके ब्रम्ह समाज से पुरोगामी था।[1] सुधार की लहर शीघ्र ही देश के अन्य भागों मे परिलक्षित होने लगी। इसी कारण महाराष्ट्र में परमहंस मण्डली तथा प्रार्थना समाज, पंजाब और उत्तर भारत के अन्य भागो में आर्य समाज की स्थापना हुई। उँची जातियो में कायस्थ सभा (यु.पी.) सरीन सभा (पंजाब), और पिछडी जातियों मे सत्यशोधक समाज (महाराष्ट्र) और नारायण धर्म परिपालन योगम् (केरल), मुसलमानों में अलीगढ आंदोलन, सिखो का सिंह - सभा, तथा पारसियों का रहनुमाई मज्देयासन सभा ने इस देश में सक्रिय भूमिका निभाई। 'उन्नीसवी सदी के भारतीय समाजों मे एक ऐसी वैचारिक उथल - पुथल सुरू हो गई, जिसने सैकडो साल की कूपमंडूकता, भेदभाव और धार्मिक असहिष्णुता की जडे खोदना सुरू कर दी'।[2] जो अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया। सामाजिक आन्दोलन के केंद्र मे कई बार सामाजिक परविर्तन विद्यमान रहता है। यह परिवर्तन किसी प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप जन्म नही लेता अपितु यह किसी न किसी समस्या के विरूध्द खडा होता है। जैसे सती - प्रथा या बाल विवाह का विरोध किया गया और विधवा पुनर्विवाह को मान्यता देने के लिये आन्दोलन किये गए।स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया। पुनर्जागरण आन्दोलन ने इसी प्रकार की सामाजिक समस्याओ को लेकर आन्दोलन किये गये। सामाजिक आन्दोलन उनके तथ्थों से प्रभावित होकर घटित होते है, जैसे प्रतिवाद, चुनौती, संघर्ष, क्रांती और सामाजिक समस्याये।[3] जो भारत भर अत्यंत प्रभावशाली के रूप मे उभरी हुई थी।

राजाराम मोहन राय (1774-1833)

इन्होंने भारतीय स्त्रियों की दशा सुधारने की दिशा में पर्याप्त उल्लेखनीय कार्य किये है। हिंदु विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में लंम्बा संघर्ष किया, इसके बाद 1855 मे बंगाल, मद्रास और बंबई आदि लोंगो ने सरकार के समक्ष बहुत बडी संख्या मे याचिकाएँ प्रस्तुत करते हुये विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ। विद्यासागर ने व्यवस्था के भीतर से होने वाले सुधारों का प्रतिनिधीत्व किया, भारतीय संस्कृती में विद्यासागर का दुसरा योगदान बंगाली प्रायमर के लेखन का विकास करने मे रहा था। 'राजा राममोहन राय ने सबसे पहले मूर्तिपूजा का विरोध किया। इसके लिए उपनिषद ग्रंथो एवं वैदिक साहित्य के अन्य ग्रंथो से बांग्ला और अंग्रेजी में अनुवाद किया '।[4] सती प्रथा के विरोध मे आंदोलन किया 1828 में ब्रम्हा सभा की स्थापना की। 1929 में बांग्ला, अंग्रेजी, फारसी और हिंदी ऐसे चार भाषाओं मे 'बंगदूत' का प्रकाशन किया।

ईश्वरचंद विद्यासागर (1820-1891)

संस्कृत के बडे विद्वान होने पर विद्यासागर की उपाधी उन्हे मिली थी। जिन्होंने बांग्ला में 'वर्ण परिचय' तैयार किया गया जो आज भी लोकप्रिय है। गाँव - गाँव में शिक्षा का प्रचार किया। हिंदू विधवाओं का पुनर्विवाह का आधिकार दिलाया। बालविवाह पर पाबंदी लगाने के लिए काफी प्रवास किया लेकीन असफल रहे।

विवेकानंद : (1863-1902)

यह नरेंद्रनाथ दत्त के नाम से जाने जाते थे । रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। जो बाद मे विवेकानंद के रूप में प्रसिध्द हुये। रामकृष्ण परमहंस के मृत्यू के पश्चात 1886 मे विवेकानंद मे अपने गुरू का संदेश प्रचार - प्रसार करना सुरू कर दिया था। इसके लिये उन्होने अपने सांसरिक जीवन का त्याग किया। देशभर मे भ्रमण करने के बाद उन्हे जो कष्टो का अनुभव आया उसके बारे मे गौतम पी.एल. कहते है की,'मै जिस प्रभु पर विश्वास करता हू वह सभी आत्माओ का समुच्चय है और सर्वोपरी है। मेरा प्रभु पतितो और सभी प्रजातियों में निर्बलो को उध्दारक है '।[5] विवेकानंद एक महान संत के रूप मे उभरे थे। उनका वेदो के उपर विश्वास था। उन्होने सभी गरीबो, दिनहीनों, पतितों एवं् पददालितो का आवाहन करते हुये उन्हे आगे आने की प्रेरणा दी और कहा 'रामकृष्ण के नाम से हम सब एक है, आओ हम सभी अपना जीवन गरीबो की सेवा के लिए पीडीतो की सेवा के प्रति समर्पित करे। धर्म संबंधी उनके विचार थे की, यदि तुम्हारा जन्म मुस्लीम परिवार में हुआ है तो एक अच्छे मुसलमान बनो, यदि हिंदु के घर हुआ है तो एक अच्छे हिंदू बनो। सभी धर्मो मे मानव के संबंधी एकता होनी चाहिए।

अरविंद घोष : (1872-1950)

पश्चिमी परिवेश के कई वर्षे गुजारने के बाद एक उग्र राष्ट्रवादी और अतंत: योगी के रूप में व्यतित्व का विकास हुआ। स्वाधीनता संग्राम मे 1905 में संपूर्ण स्वाधीनता संग्राम मे लग गए। 'युगांतर' अखबार में विद्रोह- परक लेख लिखे। 1906 में बिपिनचंद्र पाल के 'वंदे मातरम' अखबार में सहयोग लिया। उनका जोर संपूर्ण स्वतंत्रता पर था। 1908 में अलीपूर जेल से छुटने के बाद 1910 मे धर्म और योग साधना की और चिंतन - मनन किया । वे जाति, भाषा, रितिरिवाज और संप्रदायवाद - आधारित सोच से मुक्त थे और वैश्विक आध्यात्मिक चेतना के पक्ष मे थे।

दयानंद सरस्वती : (1824-1883)

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का वास्तविक नाम मूलशंकर था। 24 वर्षे तक शिक्षा हासिल की और पूर्णानन्द दण्डी स्वामी से उन्होने दीक्षा ली। उसके बाद उन्होंने अपना नाम बदलकर दयानंद सरस्वती कर दिया। बंबई आकर उन्होने 'सत्यार्थ प्रकाश' नाम ग्रंथ की रनचा की, स्वामी दयानंद के बारे में शंभुनाथ ने कहा है की, '14 वर्षे की उम्र में ही मुर्ति पूजा तथा अन्य हिंदू पाखंडो के विरोधी थे। उन्नीस वर्षे की अवस्था मे घर से निकलकर देश भ्रमण किया। वेदों के कट्टर समर्थक बने। मूर्तीपूजा की तरह बाल-विवाह, अस्पृश्यता और स्त्री - पुरूष गैर बराबरी का विरोध किया '।[6] विरजानंद की प्रेरणा से 1875 में मुंबई मे आर्य समाज की स्थापना की।

ज्योतीबा फुले (1827-1890)

ज्योतीबा फुले का जन्म माली के घर हुआ। इन्होने शक्तिशाली गैर-ब्राम्हण आन्दोलन का संचलन किया। उनकी शिक्षा, वैयक्तिक अनुभव तथा ईसाई धर्मप्रचारोको के सानिध्य ने उन्हें प्रचालित हिंदू धर्म और उसकी प्रथाओ का कट्टर आलोचक बना दिया। अछूतो के लिये निजी विद्यालय की स्थापना की और विधवाओंके साहायता के लिये अनाथालय खोला। जीनोंने ब्राम्हणो की पुरोहितशाही की घृष्णा की। वे अछूतो और गैर - ब्रामहणों में भेद नही करते थे। दलित वर्गो को शिक्षित करके उन्हे जागरूक बनाने के लिए ज्योतिबा ने 1873 मे 'सत्यशोधक' समाज की स्थापना की। 'सत्यशोधक चळवळ हीच भारतातील खेड्यापाड्यांपर्यत पहोचलेली पहिली चळवळ होती. ही चळवळ तळागाळातील लोकापर्यंत पहोचणारी एक सामाजिक प्रबोधीनी होती. '[7]ज्योतीबा फुले ने अछूतो के लिये उचीत कार्य किया उनके जीवन मे क्रांती लाई इसलिये आधुनिक तौर पे उन्हे क्रांतिबा ज्योतीबा फुले के नामो सेजाना जाता है। दलितों के बीच नवजागरण के सबसे बडे आधार स्तंभ है। उन्होने हंटर शिक्षा आयोग के समक्ष बयान दिया।

महादेव गोंविद रानडे (1842-1901)

महाराष्ट्र के महान समाज सुधारक थे। उनका जनम रूढिवादी परिवार में हुआ। कुछ वर्षो तक प्राध्यापक के बाद पूना के अदालत मे जज बने इसी दौरान बालविवाह एवं पर्दा प्रथा का विरोध,विधवा विवाह का समर्थन और स्त्रि की स्वतंत्रता के लिए बडे पैमाने पर काम किया। प्रार्थना समाज के आरंभिक सदस्यों में एक प्रभावशाली नेता जिन्होंने निर्माणात्मक कार्यो और नि:स्वार्थ सेवा भावना ने देशभक्ती की लहर पैदा की। बल्कि हजारो नवयुवकों को नई दिशा प्रदान की। बाल गंगाधर तिलक से वैचारीक टकराहट थी। दुसरें के विचारों की कद्र करने वाले, धैर्यवान व्यावहारिक और उदारवादी नेता थे।

ताराबाई शिंदे (1905)

19वी शताब्दी में सामाजिक - धार्मिक सुधारको के सम्मुख भारतीय महिलाओं के उध्दार से सम्बधित प्रश्न सामाजिक सुधार कार्यक्रम का प्रमुख मुद्दा थे। उसी समय तक महिलाओं का निर्लज्जतापूर्वक शोषण किया जाता, जैसे की सती प्रथा, बालिका वध, पर्दा, बालिका विवाह, बहु-पत्नीत्व आदी का शिकार बनाई जाती थी। 'सुधारकों की दृष्टी में जब तक महिलाएँ, जनसंख्या का लगभग आधा भागा है, तब तक शोषित, पिडीत रहेगी।'[8] 19 वी सदी मे नवजागरण के दौर मे ताराबाई शिंदे स्त्री - मुक्ती की एक महत्वपूर्ण प्रवक्ता थी। इनके पिता सत्यशोधक समाज के सदस्य थे। ताराबाई ने स्त्रियों के लिए संघर्ष किया स्त्री-पुरूष तुलना उनका एक महान प्रयास था।

गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915)

गोपाल कृष्ण गोखले को महात्मा गांधी अपना राजनितिक गुरू मानते थे। पुना से अध्यापन करने के बाद वे स्वतंत्रता संग्राम मे कुद पडे। 1890 मे वे सार्वजनिक सभा के सचिव पद पर नियुक्त किये गये। जिन्होने अकाल, प्लेग जैसे मौके पर लोगों की सहाय्यता की। बहिष्कार राजनिती के वे विरोधी थे। गोपाल कृष्ण गोखले रानडे के प्रमुख सहयोगी मित्र थे। जिन्होंने अंग्रेजी शासन से सहयोग करते हुये भी उनकी बुराईयों का विरोध किया था। इन्होंने अकाल, राहत , शिक्षा, हिंदू-मुस्लिम एकता तथा निचली जातीयों के उत्थान के लिये काफी काम किया।

छत्रपती शाहू महाराज :

कोल्हापूर के शाहू महाराज ने अत्याधिक क्रांतिकारी सुधार कार्य किए। ब्राम्हणों की निरोधक सत्ता को भंग करने के लिए, निम्न जातियों की दशा सुधारने और उन्नत करने के लिये प्रशिक्षित किया। बाद में इन सामाजिक सुधारो को आगे बढाने के लिए उन्होंने आर्यसमाज को आमंत्रित किया और अपने राज्य की प्रशासनिक सेवा के पचास प्रतिशत पदों को गैर ब्राम्हणों के लिए आरक्षित कर दिया। उन्होंने दलितो के लिए विद्यालयों की स्थापना की। पिछडी जातियों के आंदोलनो के इस संक्षिप्त सिंहावलोकन से स्पष्ट होता है कि इनमे विभेदकारी सांस्कृतिक तथा अतिवादी सुधार प्रवृत्तियाँ साम्मिलीत थी। ' गणेश अक्काजी गवई शाहू महारज के मरणोपरांन्त 'बहिष्कृत भारत' मे लिखते है की, 'धर्माच्या नावावर ज्यांना अढळ दास्यत्वाची वतनवृत्ती प्राप्त झाली, अविद्येच्या पायी जे मानसिक गुलाम बनले आणि अस्पृश्यतेच्या खोड्याने जे जनावरांपेक्षाही आगतिक झाले, त्यांची अस्पृश्यता काढण्यास हजारो वर्षापासून एकाही सत्पपुरूषास यश आले नाही, त्या ह्या हतभागी वर्गाचा हा कलंक साफ दूर करून त्यास माणसांत आणण्यास ह्या आमच्या भगवान शाहू छत्रपतींचे ठायी परमात्याने अजब सामर्थ्य दिले होते आणि म्हणूनच त्यांना आमचा 'अब्राहम लिंकन' असे संबोधले जाते.'[9] मुकनायक पाक्षिक निकालने के लिए अर्थसाहाय्य डॉ.बी.आर.आंबेडकर को उन्होंने दिया था। 4 सप्टेंबर 1921 को बाबासाहेब ने अपने लंडन से लिखे हुये खत मे 'The Piller of social Democracy' कहा था।

पेरियारई.वी.रामास्वामी : (1879-1973)

ब्राम्हणाविरोधी आंदोलन रामास्वामी के सम्मिलित हो जाने से तेजी आई और यह अधिक उग्र हो गया। 1924 मे काँग्रेस से अलग होकर इन्होने जस्टीस पार्टी के विशिष्ट वर्ग के लिए ब्राम्हण - विरोधी, जाती विरोधी सुधारणवादी विकल्प तयार किया। 1925 मे आत्मसम्मान आंदोलन सुरू किया इसका प्रमुख उद्देश यह था की, ''गैर ब्राम्हण समुदाय मे जागृती पैदा करना। उन्होंने अपने आंदोलन में ब्राम्हण पुरोहित के बिना विवाह करने मंदिर प्रवेश करते तथा अनुस्मृती की प्रतियाँ जलाने की साथ-साथ पूर्ण नास्तिकवाद का समर्थन किया। परियार ने ब्राम्हण - विरोधी आक्षेपो के लिए धर्म एवं उसकी प्रथाओं पर प्रहार किया आौर कहा कि हिंदू देवी - देवता कोरी कल्पना है। उन्होंने बुध्दिवाद के सिध्दांत का प्रतिपादन किया जिसमे ईश्वर के अस्तित्व को नकारा।

डॉ.भीमराव आंबेडकर (1891-1956)

बीसवी सदी के प्रमुख समाज सुधारक और राजनेता के रूप में उभरे। महाराष्ट्र की अस्पृश्य कहनेवाली महार जाती में जन्म। क्लास के बाहर बैठकर उन्होंने शिक्षा के बलबुते पर व्यापक तरक्की की। अछुतों के सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक अधिकारों को हासिल करने के लिए उन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। '1920 में बाबासाहाब अम्बेडकर ने अस्पृश्यता आन्दोलन का सुत्रपात किया जो आज भी बडे पैमान पर क्रियान्वीत है।[10]डॉ. बाबासाहाब अम्बेडकरने 1924 में दलित वर्ग के उत्थान के लिये बहिष्कृत हितकारीणी सभा की स्थापना की। समाज को जागृत करने के लिये वृतपत्र निकाले। मजदुरों को उनके हितो की रक्षा करने की लिये स्वतंत्र श्रमिक पार्टी का गम्म किया। सामाजिक समता प्रस्तापित करने के लिये महाड सत्याग्रह, नाशिक का कालाराम मंदिर सत्याग्रह, पुणे का पर्वती मंदिर सत्याग्रह, अमरावती के अंबादेवी मंदिर सत्याग्रह, केरल मे वेकौम सत्याग्रह किये। 1930 मे दलित वर्ग के उत्थान के लिये गोलमेज परिषदों मे उन्होंने हिस्सा लेकर महत्वपूर्ण भूमिकांये निभाई थी जो पिछडी जातीओं के लिये बहुत ही लाभदायक थी। भारत जब आजादी की देहरीपर आया, एक बार हिंदू धर्म से अलग होने तथा दलितों के सशक्तीकरण पर जोर देकर उन्होने 1956 को बौध्द धम्म को अपनाया। संविधान प्रारूप लेखन समिती के अध्यक्ष एवं स्वतंत्र भारत के पहिले कानुन मंत्री बने। कई शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं दलित हितो के लिए लगातार लेखन और संघर्ष किया।

19 वी शताब्दी में भारतीय समाज धार्मिक अन्धाविश्वासो तथा सामाजिक रूढीवाद के दुष्चक्र मे फसा हुआ था। प्रारंभ मे राजाराम मोहन राय के नेतृत्व मे बंगाल से सुधारो का आरंभ हुआ। यह सुधार की लहर शीघ्र ही देश के अन्य भागो मे परिलाक्षित होने लगी।

संदर्भ :-

1) आग्निहोत्री वी. के. : भारतीय इतिहास, एलाईड पब्लिशर्स लि., नयी दिल्ली, षष्टम संस्करण, 201, पेज नं. स.145
2) शंभूनाथ : सामाजिक क्रांती के दस्तऐवज, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004, पेज नं.15
3) सिंह वी. एन. : भारत मे सामाजिक आंदोलन, रावत पब्लिकेशन्स, जवाहर नगर, जयपूर, प्रथम संस्करण, 2005, पेज नं. 15
4) शंभूनाथ : पूर्वोक्त पेज नं. 47
5) गौतम पी.एल. : आधूनिक इतिहास का भारत, मालिक अँड कंपनी, जयपूर प्रथम संस्करण 2004 पेज नं. 149.
6) शंभूनाथ : पूर्वोक्त पेज नं. 335
7) संपा. फडके य.दि. : महात्मा फुले समग्र वाङमय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आदी संस्कृति मंडळ मुंबई, पाचवी आवृत्ती 28 नोव्हेंबर 1991 पेज नं.27
8) सिंह वी.एन. : पूर्वोक्त पेज नं. 231
9) पवार जयसिंगराव : राजर्षी शाहू स्मारक ग्रंथ ; महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधिनी, राधामगरी रोड, कोल्हापूर, प्रथम आवृत्ती 25 मे 2001 पेज नं. 95
10) अग्निहोत्री : पूर्वोक्त पेज नं. स - 171